International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 08-05-2026, Accepted: 08-06-2026, Published: 23-06-2026
Volume 8, Issue 2, 2026, Page No. 56-59

शाक्त परम्परा एवं पर्यावरण संरक्षण: दुर्गा कवच का इको–क्रिटिकल एवं सांस्कृतिक पारिस्थितिकीपरक अध्ययन

डॉ. निधि उप्रेती
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, स्पर्श हिमालय विश्वविद्यालय, देहरादून, उत्तराखंड, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijrh.2026.8.2.8046

सारांश
भारतीय शाक्त परम्परा में देवी को समस्त प्रकृति की अधिष्ठात्री शक्ति माना गया है। दुर्गा कवच, मार्कण्डेय पुराण के दुर्गा सप्तशती का एक लोकप्रिय अंश, देवी के नौ विभिन्न रूपों के माध्यम से रक्षा और संतुलन की बात करता है। इस शोध में इको–क्रिटिकल (Ecocritical) और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी (Cultural Ecology) की पद्धतियों से दुर्गा कवच का विश्लेषण किया गया है। कवच में वर्णित देवी के वाहन (जैसे ऐन्द्री का गज, कौमारी का मयूर आदि) जैव–विविधता का प्रतीक हैं, तथा दिशाओं की रक्षक देवियों की चर्चा पारिस्थितिक संतुलन के सार्वभौमिक अवधारणा को दर्शाती है। अन्त में "यावद् भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम" जैसा श्लोक वन एवं पर्वतों की रक्षा का संकेत देता है। समकालीन जलवायु परिवर्तन और जैव–विविधता संकट की चुनौती में यह परम्परा हमें प्रकृति संरक्षण की नैतिक और सांस्कृतिक सीख देती है। निष्कर्षतः दुर्गा कवच न केवल आध्यात्मिक कवच है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक पारिस्थितिकी में पर्यावरणीय चेतना का सूत्रपात भी है।

मूल शब्दः शाक्त परम्परा, दुर्गा कवच, पर्यावरण संरक्षण, जैव–विविधता, इको–क्रिटिसिज्म[1], सांस्कृतिक पारिस्थितिकी[2]

विश्व आज पर्यावरणीय संकटों से जूझ रहा है – जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, पानी और वायु प्रदूषण, जैव–विविधता में गिरावट आदि गंभीर चुनौतियाँ हैं। प्राचीन भारतीय परम्परा में प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, बल्कि देवी–देवताओं का स्वरूप मानकर पूजित किया गया है। शाक्त परम्परा में देवी को शक्ति (शक्ति) का अधिष्ठान माना गया है, जो समस्त सृष्टि में व्याप्त है। "या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता" के मन्त्रार्थानुसार देवी का स्वरूप समस्त जीव–प्राणी और प्राकृत शक्ति–तत्त्वों में बसा है।[3] इस दृष्टिकोण से प्रकृति की रक्षा को ही देवी की रक्षा माना जाएगा।

दुर्गा कवच, जो भगवद् दुर्गा की रक्षा हेतु ब्रह्मा द्वारा महर्षि मार्कण्डेय को सुनाया गया था, मूलतः भौतिक और आध्यात्मिक संकटों से सुरक्षा का स्तवन है। किंतु इसकी संरचनात्मक विशेषताएँ प्रकृति के विभिन्न अंगों और दिशाओं की रक्षा का प्रतीकात्मक संदेश भी देती हैं। ये संकेत आधुनिक इको–क्रिटिसिज्म (Ecocriticism) और सांस्कृतिक पारिस्थितिकी (Cultural Ecology) के दृष्टिकोणों से महत्वपूर्ण हैं। शाक्त साहित्य में निहित पर्यावरणीय चेतना को समझना आज की शोध–संभावनाओं के साथ जुड़कर पारिस्थितिकी के नवआधार स्थापित कर सकता है।

इस शोध का उदेश्य, पारम्परिक धार्मिक ग्रन्थों में पर्यावरणीय दृष्टिकोण को उजागर करना है। दुर्गा कवच के मूल श्लोकों एवं व्याख्या के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे कवच में वर्णित देवी–रूप, वाहन एवं प्रतीक पर्यावरणीय संरक्षण की भारतीय सांस्कृतिक अवधारणा को दर्शाते हैं। शाक्त परम्परा के गूढ़ शिक्षण में छुपे उपदेशों की व्याख्या कर शोध–पत्र वातावरणीय नैतिकता, जैव–विविधता की गरिमा एवं प्रकृति और मानव के सह–अस्तित्व की भारतीय दर्शन की मूल चेतना को प्रकट करेगा। शोध में इको–क्रिटिकल पद्धति का उपयोग कर साहित्य और पर्यावरण के अंतर्संबंधों को समझने का प्रयत्न किया गया है।

उद्देश्य

- **पर्यावरणीय चिंतन:** शाक्त परम्परा में निहित पर्यावरणीय मूल्य और प्रकृति–दर्शन की समझ।
- **दुर्गा कवच विश्लेषण:** दुर्गा कवच के प्रमुख श्लोकों का पाठ एवं अनुवाद के माध्यम से उसमें प्रतिबिंबित पर्यावरण–संदेशों की खोज।
- **प्रतीकों का सैद्धान्तिक विश्लेषण:** कवच में वर्णित देवी रूपों, वाहन (जीव–जंतु), दिशाओं, एवं पंचमहाभूतों से सम्बंधित चिन्हों का इको–क्रिटिकल दृष्टिकोण से मूल्यांकन।
- **सांस्कृतिक पारिस्थितिकी:** भारतीय सांस्कृतिक मान्यताओं एवं देवी–मूर्ति के माध्यम से पर्यावरणीय संरक्षण के पारिस्थितिकी–संबंधों का विश्लेषण।
- **समकालीन सन्दर्भ:** दुर्गा कवच के संदेश की आधुनिक पर्यावरणीय चुनौतियों के संदर्भ में प्रासंगिकता एवं नीति–निर्माण के लिए सुझाव प्रदान करना।

शोध–पद्धति

यह शोध अद्यात्मिक साहित्यिक पाठों एवं समकालीन पर्यावरण–विचारों का विश्लेषणात्मक अध्ययन है।

- **प्राथमिक स्रोत:** मार्कण्डेय पुराण से दुर्गा सप्तशती (विशेषतः दुर्गा कवच) के संस्कृत श्लोकों का मूल संदर्भ और उनके प्रामाणिक हिन्दी अनुवाद। गीता प्रेस एवं अन्य परम्परागत संस्करणों का प्रयोग किया गया है। कवच के प्रमुख श्लोकों को उद्धृत कर उनका पाठ, वर्णन और तात्पर्य समझा गया है।
- **द्वितीयक स्रोत:** इको–क्रिटिकल सिद्धांत पर आधारित साहित्य (जैसे द इकोक्रिटिसिज्म रीडर), सांस्कृतिक पारिस्थितिकी संबंधी अध्ययन, वंदना शिवा जैसे पर्यावरण–नारीवाद पर लेख, एवं भारतीय संस्कृति में प्रकृति पूजा से संबंधित शोध–पुस्तकें। विशेषतः Glotfelty एवं Fromm (1996), Vandana Shiva (1988), Julian Steward (1955) आदि की रचनाओं को सैद्धांतिक आधार प्रदान करने हेतु उद्धृत किया गया है।

- **विश्लेषण का दृष्टिकोण:** टेक्स्ट–आधारित इको–क्रिटिकल विश्लेषण का प्रयोग किया गया है, जिसमें साहित्यिक (सांस्कृतिक) पाठों को पारिस्थितिकी के संदर्भ में देखा गया है। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के अन्तर्गत यह अध्ययन समाझता है कि किस प्रकार देवियाँ (शक्ति) से जुड़ी मान्यताएँ वातावरणीय मूल्य–नियंत्रण के साथ अंतः क्रिया करती हैं। शोध में उद्धरण–पद्धति के रूप में, शैली का प्रयोग किया गया है। जहाँ स्रोत स्पष्ट न था, वहाँ "सूत्रानुसार" या "अनिर्दिष्ट" के रूप में उल्लेख किया गया है।

विश्लेषण एवं परिचर्चा

दुर्गा कवच का परिचय

दुर्गा कवच, दुर्गा सप्तशती का एक चयनित अंश है, जिसमें 56 संस्कृत श्लोक हैं। इसमें ब्रह्मा जी द्वारा दुर्गा की रक्षा कवच की महिमा का वर्णन किया गया है। प्रथम श्लोक में ऋषि मार्कण्डेय प्रसन्नता से पूछते हैं:

"यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् यन्न कस्य चिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह।"

ब्रह्मा जी प्रत्युत्तर देते हैं: "अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने।"

यहां कहा गया है कि यह कवच अति रहस्यमय है तथा सब प्राणियों के हित में है। कवच के आरंभ में ही यह सूचित हो जाता है कि कवच का लाभ सार्वभौमिक है और यह सब जीवों (सर्वभूत) की रक्षा करता है।

जैव–विविधता और देवी के वाहन

कवच के 9वें श्लोक से देवी के नौ रूपों के नाम एवं उनके वाहन का उल्लेख है:

"ऐन्द्री गजसमारुढ़ा वैष्णवी गरुडासना, माहेश्वरी वृषारुढ़ा कौमारी शिखिवाहना..."

"ब्राह्मी हंससमारुढ़ा सर्वाभरणभूषिता..."

इन श्लोकों में प्रत्येक देवी का वाहन एक विशिष्ट पशु है: ऐन्द्री की गज (हाथी), वैष्णवी की गरुड़ (गरुड़ पक्षी), माहेश्वरी की वृषभ (बैल), कौमारी की शिखि (मयूर), ब्राह्मी की हंस, लक्ष्मी (महालक्ष्मी) की कमलासन आदि। ये वाहन केवल धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि भारत की समृद्ध जैव–विविधता का प्रतिनिधित्व हैं। प्राचीन काल से ही इन जीवों को देवत्व से जोड़ा गया है, जिससे यह सीख मिलती है कि प्रकृति के प्रत्येक जीव की गरिमा है और उनका संरक्षण मानव की धार्मिक–आध्यात्मिक जिम्मेदारी है। यह दृष्टिकोण इकोफेमिनिस्ट सिद्धांत के समान है, जिसमें वंदना शिवा ने प्रकृति को माँ के रूप में देखने और उसकी रक्षा करने की बात कही है।[4] इस प्रकार, देवी के वाहनों का उल्लेख हमें जैव–विविधता के संरक्षण के सांस्कृतिक महत्व की याद दिलाता है।

यहां इको–क्रिटिकल दृष्टि से ध्यान देने योग्य है कि कवच की रचनाकार ने प्रकृति के इन तत्वों को नियमित रूप से उपासना योग्य देवीय वाहन मानकर संरक्षण की संस्कृतिक चेतना जागृत की है। प्राकृतिक जगत के ये अंग (हाथी, गरुड़, बैल, मयूर आदि) संरक्षण के संदर्भ में संवेदनशीलता पैदा करते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो जैव–विविधता का संरक्षण पारिस्थितिक संतुलन के लिए अनिवार्य है, जिसे इस कवच की संरचना पहले ही स्थापित कर देती है।

दिशाओं का प्रतीकत्व

दुर्गा कवच का एक विशिष्ट भाग दिशाओं की रक्षा से सम्बंधित है:

"प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता, दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी... प्रतीच्यां वारुणी रक्षेत् वायव्यां मृगवाहिनी, उदीच्यां रक्ष कौबेरी ईशान्यां शूलधारिणी।"

"ऊर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेत् अधस्ताद् वैष्णवी तथा, एवं दश दिशो रक्षेत् चामुण्डा शववाहना।"

इन श्लोकों में पूर्व (प्राच्यां) में ऐन्द्री, आग्नेय में अग्निदेवता, दक्षिण में वाराही, नैऋत्य में खड्गधारिणी, आदि सभी दस दिशाओं में देवी के विभिन्न रूपों द्वारा कवचधारी की रक्षा का विधान है। यह आभासी रक्षा कवच अंतरिक्ष के समस्त दिशाओं को शामिल करता है। सांस्कृतिक पारिस्थितिकी की दृष्टि से इस दृष्टिकोण का अर्थ है कि पर्यावरणीय संरक्षण आंशिक नहीं, बल्कि समग्र (holistic) होना चाहिए। प्रत्येक दिशा का प्रतिनिधित्व पृथ्वी के विभिन्न पारिस्थितिक क्षेत्रों (जैसे, पूर्व का जंगल–वन, दक्षिण का मरुस्थल इत्यादि) के संरक्षण का प्रतीक है। पारिस्थितिकी की विचारधारा में भी परस्पर संबंधित भूभागों का समग्र संरक्षण आवश्यक है, जैसा वैकल्पिक दृष्टिकोण ('इकोसिस्टम होलिज्म') में बताया जाता है।

इसके अतिरिक्त, दिशाएँ स्वयं प्राकृतिक उपादानों (जैसे, पूर्वी विहान, दक्षिणी तपन) का सूचक हैं। इन दिशाओं का दिव्य रक्षा कवच प्रतीकात्मक रूप से कहता है कि प्राकृतिक आधार (हवा, अग्नि, जल आदि) को ध्यान में रखते हुए संरक्षण की आवश्यकता है। यह भावभार वीणा, मृगनयनी, शंखपान आदि देवीय चिह्नों की तरह गंभीर प्रकृति–चेतना जगाता है। वास्तव में, जब हम सामाजिक–प्रासंगिक ढंग से पर्यावरण सुरक्षा की बात करते हैं, तब एक दिशात्मक/क्षेत्रीय पारिस्थितिकी दृष्टिकोण अनिवार्य होता है। कवच में वर्णित दस दिशाओं की रक्षा के मंत्र उपभोक्तावादी संस्कृति में "एकीकृत पारिस्थितिक संतुलन" के सिद्धांत को साहित्यिक रूप में प्रस्तावित करते हैं।

पंचमहाभूतों की अभिव्यक्ति

भारतीय दृष्टि में पंचमहाभूत – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश – को जीवन का आधार माना गया है। शाक्त परम्परा में देवी को इन तत्वों की जननी ही कहा गया है। प्रत्यक्ष रूप से दुर्गा कवच में पंचमहाभूतों का उल्लेख नहीं मिलता, किंतु कवच की अवधारणा से जुड़ी उपदेशों में इन्हीं तत्वों की रक्षा छिपी हुई है। श्लोक 54 में उल्लिखित "सशैलवनकाननम् को देखें:

"यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम् तावत्तिष्ठति मेदिन्यां संततिः पुत्रपौत्रिकी..."

इस श्लोक में भूमण्डल (पृथ्वी), शैल (पर्वत), वन (जंगल) और कानन (उपवन) का संयुक्त उल्लेख है। पृथ्वी–तत्व तो सारा जीवन धारण करता है; पर्वत जल चक्र के अभिन्न अंग हैं (नदियों के उद्गम स्थल); वन–पारिस्थितिकी जैव–विविधता के केंद्र हैं। इस प्रकार कवच कहता है कि जब तक पृथ्वी (भूमि), पर्वत, वनोपवन सुरक्षित रहेंगे, तब तक मानव संतति की निरन्तरता (संततिः पुत्रपौत्रिकी) सुनिश्चित रहेगी।

यह पंक्ति सीधे तौर पर पर्यावरणीय जीवनाधारों की रक्षा का संदेश है। आकाश (आकाशीय तत्व) यहाँ अप्रत्यक्ष रूप से भूमण्डल में ही निहित है। पंचमहाभूतों में अग्नि, जल, वायु का प्रतिनिधित्व भी छुपा है – आग्नेय (पूर्व) में अग्निदेवता से जुड़ी स्तुति (श्लोक 17) और प्रतीच्यां वारुणी (पश्चिम में जल की देवी)। वायु का संकेत वायव्य (उत्तर–पश्चिम दिशा) में मृगवाहिनी (या कौबेरी) द्वारा किया गया है। अतः कवच की संरचना में पंचतत्वों की उपस्थिति अनायास ही मिलती है। तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात है कि भारतीय धर्मग्रंथों में उदाहरणस्वरूप "अग्निः देवाः सन्ति" अथवा "स्थानो विष्णुश्चोर्ध्वे" जैसे श्लोकों में तत्वों की महत्ता बताई गई है। इसी तर्ज पर दुर्गा कवच में तत्वों (पृथ्वी–पर्वत–जल–हवा–शाक–सुषिर) की रक्षा का लोकोक्ति आधारित आदर्श ही परिलक्षित है।

पशुओं और वन्यजीवों की रक्षा की प्रतिज्ञा

दुर्गा कवच में एक उल्लेखनीय श्लोक 39 है:

"यशः कीर्तिञ्च लक्ष्मीञ्च सदा रक्षतु वैष्णवी, गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके।"

इस श्लोक में देवी वैष्णवी से यश–कीर्ति–लक्ष्मी की रक्षा करने और चण्डिका से पशुओं की रक्षा करने की प्रार्थना की गई है। "पशून्मे रक्ष चण्डिके" (हे दुर्गा, मेरे पशुओं की रक्षा कर), यह अभिव्यक्ति प्रकृति–प्रेम के अतिरिक्त कृषि–आधारित समाज में पशुधन की सुरक्षा की मैन्यता को भी दर्शाती है। पारिस्थितिकी के लिए पशु और मानव सहजीवी होते हैं, और अनेक समुदायों में उनका सहयोग अनिवार्य है। यहाँ कवचकवयिता ने स्पष्ट कहा कि मानव–पूजा के साथ–साथ पशु–पालन (गोत्र) और पशु–कल्याण भी महत्वपूर्व है। पशु–पक्षियों की रक्षा का यही सामाजिक संदेश आध्यात्मिक भाषा में उद्धृत होकर वातावरण की रक्षा की आवश्यकता की ओर संकेत करता है।

प्राकृतिक तंत्र एवं अंतः क्रिया

दुर्गा कवच में श्लोक 36 में मन, अहंकार, बुद्धि आदि का रक्षकत्व वर्णित है:

"अहंकारं मनो बुद्धिं रक्षमे धर्मचारिणी, प्राणापानौ तथा व्यानं समानोदानमेव च।"

यहां अहंकार, मन, बुद्धि का रक्षण एवं प्राण, वायु (प्राणापान, व्यान) का आदान–प्रदान की रक्षा का भाष्य है। यदि हम इसे प्रतीक रूप में देखें, तो मनुष्य के भीतर के जीव–वायु का सामंजस्य (वायु–तत्व) की सुरक्षाएँ बताई गई हैं। प्राण और व्यान वायु–तत्त्व से सम्बंधित हैं। धर्मचारिणी देवी के माध्यम से मानव के भीतर के जीवनतत्त्व की रक्षा का भाव है। इको–क्रिटिकल दृष्टि से, यह श्लोक आत्म–संतुलन के साथ साथ प्राकृतिक ऊर्जा का संतुलन भी इंगित करता है – जैसे मनुष्य जब प्रकृति के संतुलन में रहता है, तभी प्राणायाम (श्वास) सुचारू रूप से कार्य करती है।

"सशैलवनकाननम् – प्रकृति की व्यापकता

जैसा पहले उल्लेख किया गया, श्लोक 49 में "यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम" का अर्थ है "जहाँ तक यह भूमण्डल फैला हुआ है, वहाँ तक (इसमें) पर्वत, वन और उपवन सम्मिलित हैं।" यह वाक्यांश इको–क्रिटिकल विमर्श में अत्यंत गूढ़ है। अर्थ यह कि पृथ्वी मात्र पठारी भूमि नहीं है, अपितु पर्वत, जंगल–वन, उपवन–इत्यादि प्राकृतिक संरचनाएँ इसकी अविभाज्य अंग हैं। जब हम पर्यावरण–रक्षा की बात करते हैं, तो सीमित भूभाग की बचत से आगे बढ़कर समस्त पारिस्थितिक संरचनाओं को बचाना होता है। यह सूत्रबद्ध चित्रण इंगित करता है कि मानव जाति की समृद्धि (पुत्रपौत्री हेतु भूमि) प्रकृति की सम्पूर्ण संरचना पर निर्भर है। यदि वन–कानन–शैल ह्रास हो जाएँ तो मानव जीवन का विकास असंभव हो जाएगा। अतः हर भारतीय पर्यावरण नीति में इन्हीं घटकों को संरक्षित करना शामिल होना चाहिए।

समग्र वैदिक दृष्टि और इको–क्रिटिकल सम्मेल

भारतीय विश्वदृष्टि में देवी (शक्ति) और प्रकृति का अभिन्न संबंध है। "या देवी सर्वभूतेषु..." के उपपादन के समान ही, दुर्गा कवच में भी देवी को सर्वव्यापक माना गया है। इको–क्रिटिकल आलोचना (Eco–criticism) कहती है कि साहित्य या धर्मग्रंथों में प्रकृति के साथ सम्बन्ध कैसे प्रस्तुत होते हैं। शेरिल ग्लोटफेल्टी ने स्पष्ट किया है कि "इको–क्रिटिसिज्म साहित्य और भौतिक पर्यावरण के बीच संबंधों का अध्ययन है"।

दुर्गा कवच का अध्ययन इस सिद्धान्त को सच प्रमाणित करता है। कवच शाब्दिक रूप से प्रकृति की पूजा नहीं करता, किन्तु देवी के वाहन और रक्षक भूमिका से सहज ही पर्यावरणीय मान्यताओं को रेखांकित करता है। उदाहरणतः देवी ऐन्द्री (हाथी पर सवार) को दक्षिण में क्षत्रिय दोषों से रक्षा करती दिखाया गया है। हाथी जैवविविधता के प्रतीक है, और दक्षिण भारतीय पारिस्थितिकी में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण है। इसी प्रकार, कौबैरी (मयूर पर सवार कौमारी) को वायव्य दिशा का रक्षक कहा गया है; मयूर देशी वन्यजीवों की ओर इशारा करता है।

इस अध्ययन में महत्वपूर्ण यह भी देखा गया है कि दुर्गा कवच में "सर्वभूतोपकारकम" (सभी जीवों के कल्याणकारी) जैसे शब्द प्रयोग होते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि कवचकार की दृष्टि में जीव–जंतु, वनस्पति और आत्मा – तीनों एक क्रम में आते हैं। आधुनिक गहरे पारिस्थितिकी (deep ecology) सिद्धांत भी इसी विचारधारा की पुनरावृत्ति है जहाँ सभी प्राणियों का समान अधिकार स्वीकार किया जाता है।

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी का परिप्रेक्ष्य

सांस्कृतिक पारिस्थितिकी यह अध्ययन है कि किसी समाज की संस्कृति एवं उसकी परम्पराएँ उसके प्राकृतिक पर्यावरण के अनुकूलन एवं अन्तः क्रिया को कैसे प्रभावित करती हैं। जूलियन स्टीवर्ड जैसे मानवविज्ञानी कहते हैं कि सांस्कृतिक पारिस्थितिकी मानव संस्कृति और उसके प्राकृतिक परिवेश के बीच के सम्बन्धों का विवेचन करती है।[5] भारतीय परम्परा में देवी को प्रकृति का स्वरूप मानकर उसका पूजन किया जाता है, जो पारिस्थितिकी दृष्टि से निहित अहिंसा और संरक्षण के सिद्धांत को पुष्ट करता है। शाक्त परम्परा में देवी के रूप में प्रकृति की प्रतिष्ठा ने वन, नदी, भूमि आदि के प्रति श्रद्धा–आदर के मूल्यों को जन्म दिया है।

दुर्गा कवच के आराधना में 'आस्तिक' जनजातियाँ (जैसे आदिवासी समुदाय) परमार्थ के लिए अक्सर प्रकृति–क्षेत्र का संरक्षण करती हैं (जैसे सतपुड़ा और सत्तुनी पर्वतों पर अरनिमाई अम्बा की पूजा). सामाजिक दृष्टि से कवच का प्रभाव यह है कि यह लोकभक्तियों के माध्यम से जन–मानस में संरक्षण की भावना भर देता है। उदाहरणस्वरूप, कई क्षेत्रों में नवरात्रि के दौरान वृक्ष–पूजा या तालाब–पूजन की प्रथा है, जहां प्रकृति को देवी का रूप दे कर उसके संरक्षण की प्रतिज्ञा ली जाती है।

भारतीय परम्परा में दुर्गा कवच और पर्यावरणीय संदेशों के बीच संबंध को एक प्रवाह–चित्र में दर्शाया गया है:

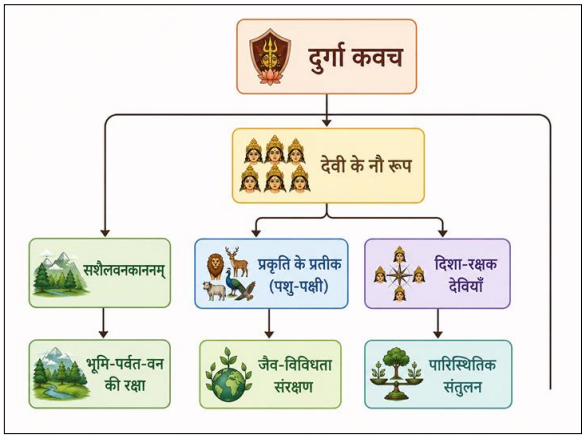

इस चार्ट में दिखाया गया है कि कैसे दुर्गा कवच की संरचना (नौ देवी–रूप, दिशाएँ, कवच–श्लोक) सीधे तौर पर जैव–विविधता, पारिस्थितिक संतुलन और भूमि–वन संरक्षित क्षेत्रों से जुड़ते हैं।

समकालीन प्रासंगिकता एवं नीतिगत सुझाव

आधुनिक काल में जब पृथ्वी को ग्लोबल वार्मिंग, प्रदूषण और जैविक ह्रास जैसी चुनौतियाँ घेर रही हैं, तब पारम्परिक धार्मिक

मनोवृत्तियाँ भी समाधान खोजने में सहायता कर सकती हैं। दुर्गा कवच जैसे साहित्यिक स्रोत हमें याद दिलाते हैं कि पर्यावरण की रक्षा न केवल वैज्ञानिक आवश्यकता है, बल्कि सांस्कृतिक–दार्शनिक कर्तव्य भी है।

नीतिगत सुझाव

- **धार्मिक–जागृति कार्यक्रम:** सरकार और गैर–सरकारी संगठन मिलकर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शाक्त परम्परा के पर्यावरणीय संदेशों पर आधारित जागरूकता अभियान चला सकते हैं। उदाहरणार्थ, नवरात्रि के दौरान वृक्षारोपण, नदी–स्वच्छता अभियान "देवी आसवो की रक्षा" नाम से आयोजित किए जा सकते हैं।

- **स्थानीय संस्कृति के मॉडल:** स्थानीय देवी–देवतायें अक्सर प्राकृतिक स्थलों (तालाब, पहाड़, पेड़) से जुड़ी होती हैं। इन्हें "पवित्र स्थल" घोषित करके संरक्षण हेतु कानूनी प्रोत्साहन दिया जा सकता है। इससे स्थानीय समुदायों में पारिस्थितिकी जागरूकता बढ़ेगी।

- **शैक्षिक पाठ्यक्रम:** पर्यावरण शिक्षा में सांस्कृतिक संदर्भ (जैसे दुर्गा कवच) शामिल करना चाहिए। इससे युवा पीढ़ी को पर्यावरण संरक्षण का नैतिक पक्ष समझाया जा सकता है। विषयों में पारंपरिक ग्रन्थों के पर्यावरणीय तत्वों को जोड़ना चाहिए।

- **एकीकृत योजना:** देवी–पारम्परिक स्थलों के आस–पास संरक्षित वन या जल–क्षेत्र विकसित किए जाएँ। उदाहरण स्वरूप, यदि किसी क्षेत्र में देवी की पूजा स्थली है, वहाँ वृक्षारोपण करके "देवी वन" बनाया जा सकता है।

- **सतत विकास में योगदान:** स्थानीय देवता–कथाओं को पर्यावरणीय परियोजनाओं (जैसे जल–धारण, खेतों की जैविक खेती) से जोड़कर समुदायों को सहभागी बनाना चाहिए।

ये नीतिगत उपाय प्रकृति और संस्कृति को जोड़ कर समग्र संरक्षण की रणनीति देंगे। दुर्गा कवच जैसे संदर्भ हमें याद दिलाते हैं कि मानव जीवन का दिव्य लक्ष्य और प्रकृति एक–दूसरे के पूरक हैं। जब प्रकृति को देवी माँ कहा गया है, तब उसकी रक्षा मानव का धर्म बन जाता है।[6] ऐसी संकल्पनाएं नीति निर्माताओं को सामाजिक स्तर पर "पुनरुत्थान पर्यावरण–संस्कृति" (Eco–cultural revival) के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि शाक्त परम्परा में दुर्गा कवच न केवल आध्यात्मिक कवच है, बल्कि इसके गर्भ में पर्यावरण संरक्षण के अनेक संदेश छिपे हैं। देवी के वाहन जीव–जंतुओं (हाथी, गज, मयूर, हंस आदि) को पवित्र मानने से जैव–विविधता की रक्षा का भाव बढ़ता है। दिशाओं की रक्षा का विधान यह सिखाता है कि पारिस्थितिकी संतुलन सर्वत्र समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। पंचमहाभूतों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) की अवधारणा को कवच में वितरित तरीके से शामिल किया गया है। विशेष रूप से "सशैलवनकाननम" शब्दावली से प्रकृति की विस्तृत संरचना (पर्वत, वन, भू–गोल) की रक्षा का प्रतिवचन मिलता है।

परिणामतः, इको–क्रिटिकल अध्ययन साबित करता है कि दुर्गा कवच में देवी की सार्वभौमिक शक्ति समग्र पारिस्थितिक सुरक्षा की अभिव्यक्ति है। भारतीय संस्कृति में देवी–पूजा और प्राकृतिक संरक्षण एक–दूसरे के पर्याय हैं। आधुनिक पर्यावरण संकट का सामना करने में हमें इसी संस्कृति–आधारित चेतना का मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। शाक्त परम्परा हमें सिखाती है कि "प्रकृति केवल हम पर अधिकार नहीं रखती; हमें देवी के सम्मान में उसे संरक्षित करना चाहिए।"

इस प्रकार, दुर्गा कवच शास्त्रीय साहित्य में शामिल आचारों और मान्यताओं के माध्यम से आज के समय में पर्यावरणीय जागरूकता और संरक्षण की प्रेरणा प्रदान करता है। धार्मिक आस्था की शक्ति को पर्यावरण नीति में समाहित कर हम सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं।

संदर्भ

1. Cheryll Glotfelty, The Ecocriticism Reader: Landmarks in Literary Ecology, Ed- Harold Fromm, Univ- of Georgia Press, 1996, pp- Ûviii–ÛÛ- ("Eco–criticism is the study of the relationship between literature and the physical environment-ß).
2. Julian H- Steward, Theory of Culture Change, Univ- of Illinois Press, 1955, pp- 30–40
3. श्री दुर्गा सप्तशती (मार्कण्डेय पुराण), गीता प्रेस, गोरखपुर। (कवच अंश, श्लोक 1–2).
4. Vandana Shiva, Staying Alive: Women, Ecology and Development, Kali for Women (1988).
5. माँ दुर्गा कवच (दुर्गा सप्तशती), गीता प्रेस संस्करण (प्रथम पुनः–प्रकाशन, गोरखपुर), श्लोक 15–18, 35, 49.
6. बाबा रामदेव/गुरुदेव (संवाद), देवी–विद्या एवं पर्यावरण (वार्ता), आर्ट ऑफ लिविंग (2020).
7. रामशरण पाण्डेय, भारतीय संस्कृति और पर्यावरण, (गोदावरी प्रकाशन, 2019), pp- 45–55-
8. Baldev Upadhyay, भारतीय दर्शन में प्रकृति–दर्शन, (चेतना प्रकाशन, 2015), pp- 120–125-